

阅读与欣赏文库

中华成语故事

ZHONG HUACHENGYUGUSHI

邓云霞 / 主编



阅读与欣赏文库

青海人民出版社

金石为开 开诚布公 功败垂成
程门立雪 雪中送炭 叹为观止
纸上谈兵 兵贵神速 速战速决
绝处逢生 生灵涂炭 谈笑风生

中华成语故事

主编 邓云霞

青海人民出版社

阅读与欣赏文库
中华成语故事

主 编: 邓云霞
责任编辑: 孙明媚
出 版: 青海人民出版社
发 行: 新华书店经销
印 刷: 吉林省鑫源印刷有限责任公司
开 本: 880×1230 毫米 大32开
字 数: 3200 千字
印 张: 130
版 次: 2004年7月第1版
印 数: 1~3000 册

书 号: ISBN 7-225-022555-5/G·917
总 定 价: 188.00 元(全套10册)

前　　言

一位著名学者曾这样深情地告诫青年人：“热爱读书吧！书是社会，一本好书就是一个好的世界，好的社会。它能陶冶人的感情和气质，使人高尚。”正是基于这一美好的心愿，我们为广大青少年朋友精心编纂了这套《阅读与欣赏文库》。

这套丛书为你们打开了一个五彩缤纷的知识世界。它是集知识、思想、文学为一体的读物，通过这套丛书，你们可以涉猎祖国古典文学宝库中的经典名篇，了解祖国悠久历史和文明成就、吸取继承中华民族优良传统，从而提高自己的思想文化素质。我们相信，无论是谁，只要认真阅读这套书，仔细品味它，都会从中获得令人愉悦的收益和启迪。

在求知的道路上，书籍永远是青少年们最好的朋友。愿这套丛书像一艘大海中破雾疾行的航船那样，伴随着青少年的成长脚步健康成长。



目 录

一画

| | |
|-------|-----|
| 一意孤行 | (1) |
| 一败涂地 | (2) |
| 一挥而就 | (3) |
| 一箭双雕 | (4) |
| 一诺千金 | (6) |
| 一去不复还 | (8) |

二画

| | |
|-----------|------|
| 七步之才 | (8) |
| 八面威风 | (10) |
| 十行俱下 | (10) |
| 入木三分 | (11) |
| 人言可畏 | (14) |
| 人杰地灵 | (15) |
| 人非圣贤，孰能无过 | (18) |

三画

| | |
|------|------|
| 寸草春晖 | (19) |
| 大逆不道 | (19) |
| 大笔如椽 | (20) |
| 大腹便便 | (21) |

目
录



| | |
|------|------|
| 口蜜腹剑 | (22) |
| 口若悬河 | (23) |
| 门庭若市 | (24) |
| 门可罗雀 | (26) |
| 千载难逢 | (28) |
| 千钧一发 | (29) |
| 三人成虎 | (31) |
| 三令五申 | (32) |
| 土崩瓦解 | (33) |
| 亡羊补牢 | (34) |
| 万死不辞 | (35) |
| 义无反顾 | (36) |

四画

| | |
|------|------|
| 不得要领 | (37) |
| 不耻下问 | (40) |
| 不遗余力 | (41) |
| 不学无术 | (43) |
| 不求甚解 | (44) |
| 不拘一格 | (45) |
| 不堪回首 | (46) |
| 不合时宜 | (47) |
| 不伦不类 | (49) |
| 不寒而栗 | (50) |
| 开诚布公 | (51) |
| 开天辟地 | (52) |
| 毛遂自荐 | (53) |
| 日暮途穷 | (55) |



| | |
|-------------|------|
| 为虎作伥 | (56) |
| 水深火热 | (57) |
| 水落石出 | (60) |
| 水滴石穿 | (61) |
| 天之骄子 | (63) |
| 天衣无缝 | (64) |
| 心旷神怡 | (65) |
| 以一当十 | (66) |
| 以强凌弱 | (67) |
| 以邻为壑 | (71) |
| 以小人之心，度君子之腹 | (72) |
| 专横跋扈 | (73) |
| 专心致志 | (74) |
| 分道扬镳 | (75) |
| 风声鹤唳 | (76) |
| 从善如流 | (79) |
| 从容不迫 | (80) |

五画

| | |
|-----------|------|
| 东山再起 | (81) |
| 东窗事发 | (82) |
| 东施效颦 | (83) |
| 尔虞我诈 | (84) |
| 乐此不疲 | (85) |
| 令行禁止 | (86) |
| 宁为玉碎，不为瓦全 | (87) |
| 目光如炬 | (90) |
| 扑朔迷离 | (91) |

目
录

| | |
|-----------|-------|
| 巧夺天工 | (93) |
| 生死存亡 | (95) |
| 生花妙笔 | (95) |
| 四面楚歌 | (96) |
| 四分五裂 | (98) |
| 师出无名 | (99) |
| 四海之内皆兄弟 | (100) |
| 外强中干 | (100) |
| 出类拔萃 | (101) |
| 出人头地 | (103) |
| 出言不逊 | (104) |
| 出尔反尔 | (105) |
| 出奇制胜 | (106) |
| 民不聊生 | (107) |
| 民以食为天 | (108) |
| 匹夫之勇 | (109) |
| 世外桃源 | (110) |
| 迎刃而解 | (111) |
| 叹为观止 | (112) |
| 失之毫厘,差之千里 | (113) |
| 皮之不存,毛将焉附 | (114) |

六画

| | |
|--------|-------|
| 百折不挠 | (115) |
| 百丈竿头 | (117) |
| 百川归海 | (117) |
| 百感交集 | (118) |
| 百闻不如一见 | (119) |

目 录

| | |
|------|-------|
| 汗马功劳 | (120) |
| 汗流浃背 | (121) |
| 华而不实 | (122) |
| 后生可畏 | (123) |
| 江郎才尽 | (124) |
| 尽善尽美 | (125) |
| 近水楼台 | (127) |
| 老妪能解 | (128) |
| 老莱娱亲 | (129) |
| 老生常谈 | (130) |
| 老马识途 | (131) |
| 名正言顺 | (132) |
| 名落孙山 | (133) |
| 曲尽其妙 | (135) |
| 曲高和寡 | (136) |
| 如释重负 | (137) |
| 如鱼得水 | (139) |
| 如火如荼 | (140) |
| 伤风败俗 | (141) |
| 守株待兔 | (142) |
| 杀身成仁 | (143) |
| 死灰复燃 | (143) |
| 行将就木 | (145) |
| 因势利导 | (146) |
| 有志竟成 | (147) |
| 刎颈之交 | (148) |
| 有名无实 | (149) |



| | |
|------|-------|
| 有备无患 | (150) |
| 有恃无恐 | (151) |
| 羽毛未丰 | (152) |
| 运筹帷幄 | (154) |
| 自惭形秽 | (155) |
| 自相矛盾 | (156) |
| 防微杜渐 | (157) |
| 孤注一掷 | (158) |
| 众志成城 | (159) |
| 众怒难犯 | (160) |
| 众叛亲离 | (161) |
| 走马观花 | (162) |
| 讳疾忌医 | (163) |

七画

| | |
|---------|-------|
| 识时务者为俊杰 | (164) |
| 别开生面 | (165) |
| 兵不厌诈 | (166) |
| 沧海桑田 | (167) |
| 赤膊上阵 | (169) |
| 呆若木鸡 | (169) |
| 改过自新 | (171) |
| 饮鸩止渴 | (172) |
| 肝脑涂地 | (173) |
| 狐假虎威 | (173) |
| 两袖清风 | (174) |
| 呕心沥血 | (175) |
| 杞人忧天 | (176) |

| | |
|------|-------|
| 忍辱负重 | (177) |
| 声东击西 | (178) |
| 声色俱厉 | (180) |
| 声名狼藉 | (181) |
| 投笔从戎 | (182) |
| 完璧归赵 | (183) |
| 沆瀣一气 | (185) |
| 忧心如焚 | (185) |
| 劳而无功 | (186) |
| 穷兵黩武 | (187) |
| 犹豫不决 | (189) |
| 余音绕梁 | (190) |
| 余勇可贾 | (191) |
| 纸醉金迷 | (191) |
| 束之高阁 | (192) |
| 志大才疏 | (193) |
| 纵虎归山 | (195) |
| 邯郸学步 | (197) |
| 作法自毙 | (198) |
| 鸡犬升天 | (199) |
| 鸡鸣狗盗 | (200) |
| 作威作福 | (201) |

八画

| | |
|------|-------|
| 拔苗助长 | (202) |
| 杯弓蛇影 | (203) |
| 废寝忘食 | (204) |
| 奉公守法 | (205) |

| | |
|-----------|-------|
| 奋不顾身 | (206) |
| 画蛇添足 | (207) |
| 画龙点睛 | (208) |
| 金玉其外,败絮其中 | (209) |
| 金石为开 | (212) |
| 居安思危 | (213) |
| 卷土重来 | (213) |
| 侃侃而谈 | (215) |
| 刻舟求剑 | (216) |
| 空前绝后 | (218) |
| 空中楼阁 | (219) |
| 迷途知返 | (220) |
| 明察秋毫 | (221) |
| 明珠暗投 | (222) |
| 明修栈道,暗度陈仓 | (223) |
| 明哲保身 | (225) |
| 其貌不扬 | (226) |
| 青出于蓝 | (227) |
| 取而代之 | (227) |
| 丧心病狂 | (228) |
| 姗姗来迟 | (229) |
| 贪生怕死 | (231) |
| 退避三舍 | (231) |
| 玩火自焚 | (233) |
| 玩物丧志 | (234) |
| 怙恶不悛 | (234) |
| 卧薪尝胆 | (235) |

| | |
|-------------|-------|
| 茕茕孑立 | (236) |
| 卧榻之侧，岂容他人鼾睡 | (237) |
| 物以类聚 | (238) |
| 夜以继日 | (239) |
| 夜郎自大 | (240) |
| 英雄无用武之地 | (241) |
| 鱼目混珠 | (243) |
| 择善而从 | (244) |
| 斩草除根 | (245) |
| 招摇过市 | (246) |
| 味如鸡肋 | (247) |
| 直言不讳 | (248) |
| 炙手可热 | (249) |

九画

| | |
|---------|-------|
| 标新立异 | (250) |
| 草菅人命 | (251) |
| 草木皆兵 | (252) |
| 春风得意 | (253) |
| 独当一面 | (254) |
| 赴汤蹈火 | (255) |
| 骇人听闻 | (256) |
| 将勤补拙 | (259) |
| 举棋不定 | (259) |
| 举案齐眉 | (261) |
| 举足轻重 | (262) |
| 柳暗花明 | (263) |
| 冒天下之大不韪 | (264) |



| | |
|-----------|-------|
| 罚不当罪 | (265) |
| 南辕北辙 | (266) |
| 怒发冲冠 | (267) |
| 前车之鉴 | (268) |
| 前无古人 | (269) |
| 前功尽弃 | (271) |
| 前事不忘,后事之师 | (272) |
| 秋风过耳 | (273) |
| 甚嚣尘上 | (274) |
| 神机妙算 | (275) |
| 神工鬼斧 | (276) |
| 食不甘味 | (277) |
| 食言而肥 | (279) |
| 舐犊情深 | (280) |
| 闻鸡起舞 | (281) |
| 项庄舞剑,意在沛公 | (282) |
| 相敬如宾 | (283) |
| 信口雌黄 | (284) |
| 信誓旦旦 | (285) |
| 洗耳恭听 | (286) |
| 养虎遗患 | (287) |
| 首鼠两端 | (288) |
| 洛阳纸贵 | (288) |
| 指鹿为马 | (289) |
| 重于泰山,轻于鸿毛 | (290) |
| 重蹈覆辙 | (291) |



十画

| | |
|------|-------|
| 爱屋及乌 | (292) |
| 班门弄斧 | (293) |
| 宾至如归 | (294) |
| 流言蜚语 | (295) |
| 秦晋之好 | (297) |
| 捕风捉影 | (298) |
| 秦镜高悬 | (299) |
| 乘人之危 | (300) |
| 请君入瓮 | (301) |
| 唇亡齿寒 | (302) |
| 逐鹿中原 | (303) |
| 倒行逆施 | (304) |
| 恶贯满盈 | (305) |
| 高屋建瓴 | (306) |
| 高山流水 | (307) |
| 害群之马 | (308) |
| 悔过自新 | (309) |
| 悔之无及 | (310) |
| 家徒四壁 | (312) |
| 兼听则明 | (313) |

十一画

| | |
|------|-------|
| 探囊取物 | (313) |
| 骑虎难下 | (314) |
| 雪中送炭 | (317) |
| 望洋兴叹 | (317) |
| 望尘莫及 | (318) |



| | |
|------|-------|
| 望梅止渴 | (319) |
| 推心置腹 | (321) |
| 萍水相逢 | (322) |
| 脱颖而出 | (323) |
| 脚踏实地 | (323) |
| 庸人自扰 | (324) |
| 鸿鹄之志 | (325) |
| 虚有其表 | (326) |
| 寄人篱下 | (327) |
| 惊弓之鸟 | (328) |

十二画

| | |
|------|-------|
| 集思广益 | (329) |
| 绿衣使者 | (330) |
| 道听途说 | (331) |
| 强弩之末 | (332) |
| 嗟来之食 | (334) |
| 程门立雪 | (335) |
| 痛心疾首 | (335) |
| 痛定思痛 | (337) |
| 铸成大错 | (340) |
| 越俎代庖 | (341) |
| 朝三暮四 | (341) |
| 惩一戒百 | (342) |

十三画

| | |
|------|-------|
| 满城风雨 | (343) |
| 惩前毖后 | (344) |
| 坚壁清野 | (345) |



| | |
|------|-------|
| 塞翁失马 | (346) |
| 嫁祸于人 | (347) |
| 滥竽充数 | (348) |
| 痴人说梦 | (351) |
| 鹏程万里 | (351) |
| 蜀犬吠日 | (352) |
| 愚公移山 | (353) |
| 感激涕零 | (354) |
| 蓝田生玉 | (356) |

十四画

| | |
|------|-------|
| 精疲力尽 | (357) |
| 精卫填海 | (358) |
| 摧枯拉朽 | (360) |
| 模棱两可 | (361) |
| 旗鼓相当 | (363) |
| 鹤立鸡群 | (364) |
| 辗转反侧 | (366) |
| 滴水穿石 | (367) |
| 竭泽而渔 | (368) |

十五画

| | |
|---------|-------|
| 醉翁之意不在酒 | (369) |
| 熟能生巧 | (370) |
| 箭在弦上 | (371) |
| 摩肩接踵 | (372) |
| 德高望重 | (373) |

十六画

| | |
|------|-------|
| 颠倒黑白 | (374) |
|------|-------|